ग्रामीण भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास की नई दिशाएँ

चंद्रकांत चावला, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, सूरतगढ़ पी.जी कॉलेज, सूरतगढ़

सार

ग्रामीण भारत भारतीय सामाजिक सरचना का एक महत्वपूर्ण आधार है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर अंतः क्रिया के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन की नई प्रक्रियाएँ विकसित हो रही हैं। शिक्षा के प्रसार, संचार एवं डिजिटल तकनीक, सरकारी विकास योजनाओं, ग्रामीण रोजगार के बदलते स्वरूप तथा आधारभूत सुविधाओं के विस्तार ने ग्रामीण जीवन और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है। बर्तमान समय में ग्रामीण समाज केवल कृषि आधारित अर्थव्यवस्था तक सीमित न रहकर विविध आजीविका, प्रवासन, डिजिटल सेवाओं और नए सामाजिक अवसरों की ओर बढ़ रहा है। इसके साथ ही जाति, वर्ग, लैंगिक असमानता, बेरोजगारी और संसाधनों तक असमान पहुँच जैसी चुनौतियाँ अभी भी सामाजिक विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण भारत में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों तथा विकास की उभरती दिशाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक तकनीक, शिक्षा और विकास कार्यक्रम ग्रामीण समुदायों की सामाजिक संरचना, जीवनशैली और सामाजिक गतिशीलता को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। यह अध्ययन समावेशी एवं सतत ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक भागीदारी और समान अवसरों के महत्व को भी रेखांकित करता है।